Postal Regn. - RTK/010/2020-22
RNI - HRHIN/2003/10425

ओ३म्

आर्य प्रतिनिधि

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का पाक्षिक मुखपत्र

दिसम्बर 2023 (द्वितीय)

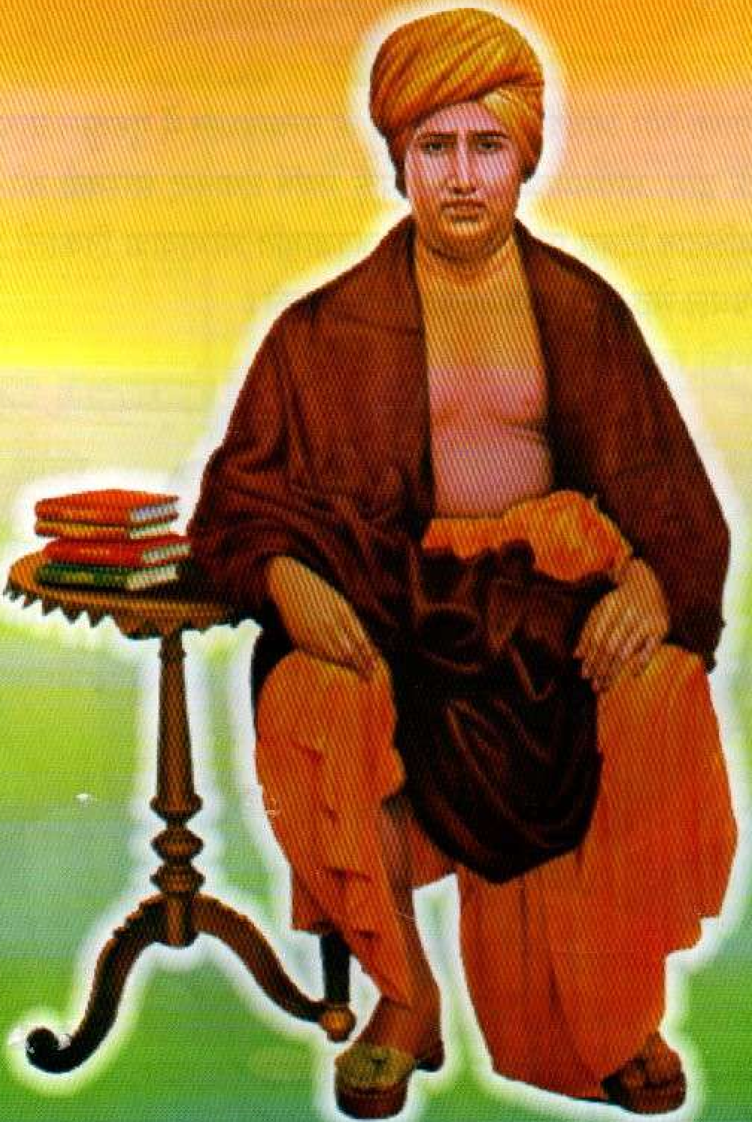

Email : aryapsharyana@yahoo.in

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

Visit us : www.apsharyana.org

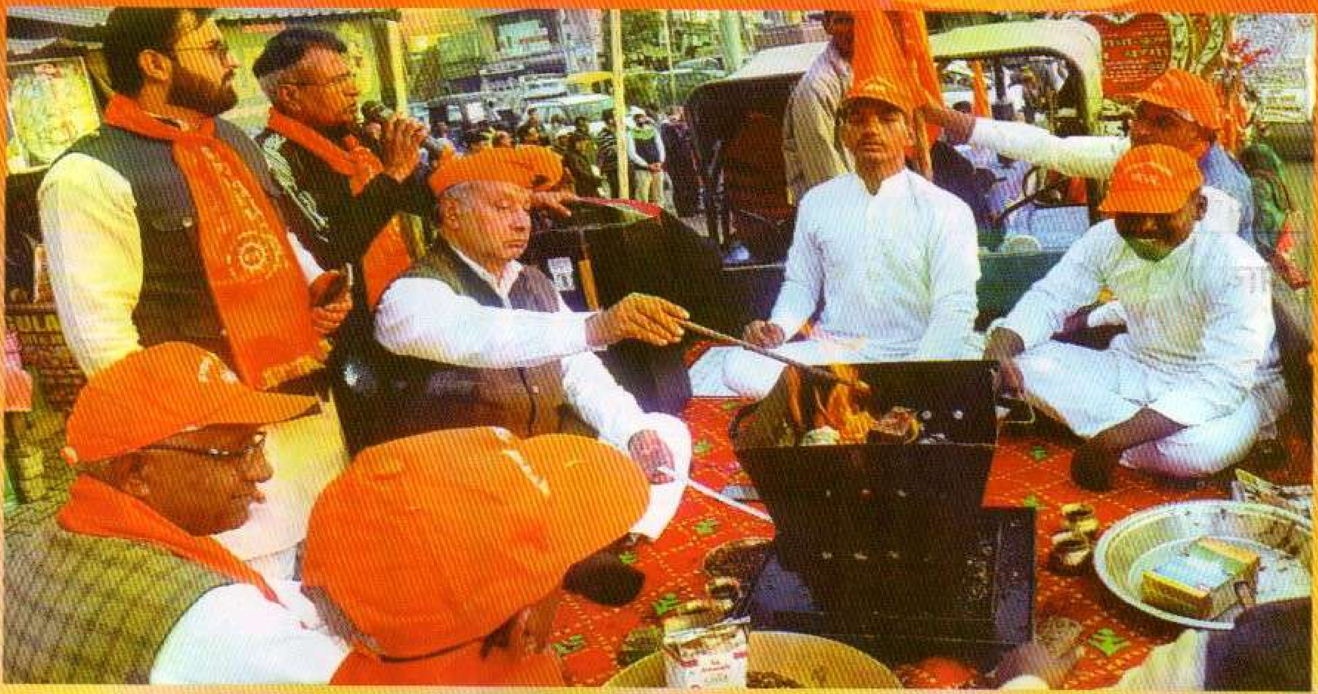

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा और आर्यवीर दल हरयाणा के तत्त्वावधान में गुरुकुल कुरुक्षेत्र के सैकड़ों विद्यार्थियों और पदाधिकारी व स्टाफ के द्वारा आर्यसमाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती की 200वीं जन्म जयंती व स्वामी श्रद्धानन्द सरस्वती के बलिदान दिवस पर वेदप्रचार व जनजागृति शोभायात्रा निकाली गई जिसे मुख्य अतिथि के रूप में आर्य प्रतिनिधि सभा प्रधान सेठ राधाकृष्ण आर्य ने शिरकत की।

स्वामी श्रद्धानन्द सरस्वती जी की पावन स्मृति में 97वां स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस समारोह आर्यसमाज भीमनगर गुरुग्राम में मनाया गया जिसे मुख्य अतिथि के रूप में आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के प्रधान सेठ राधाकृष्ण आर्य जी ने शिरकत कर सभी से आह्वान किया कि सभी स्वामी श्रद्धानन्द सरस्वती के पद चिह्नों पर चलकर समाज को मजबूत और देश को आगे बढ़ने का काम करें।

सृष्टि संवत् 1,96,08,53,124

विक्रम संवत् 2080

दयानन्दाब्द 200

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा

की

मुख-पत्रिका

वर्ष 19 अंक 22

सम्पादक :

उमेद सिंह शर्मा

पत्रिका-शुल्क

देश में

वार्षिक-200 रुपये आजीवन-2000 रुपये

विदेश में

वार्षिक शुल्क 100 डॉलर

आजीवन 400 डॉलर

पत्रिका का स्वामित्व

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा (रजि०)

सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ,

गोहाना रोड, रोहतक-124001

सह-सम्पादक

आचार्य सोमदेव

सम्पादकीय विभाग

सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक

सम्पर्क सूत्र-

चलभाष :-

मो० 89013 87993

॥ ओ३म् ॥

आध्यात्मिक, सामाजिक, राष्ट्रीय चिन्तन एवं वैदिक जीवन मूल्यों की पाक्षिक पत्रिका

आर्य प्रतिनिधि

दिसम्बर, 2023 (द्वितीय)

16 से 30 दिसम्बर, 2023 तक

इस अंक में....

1. सम्पादकीय-वेद-प्रवचन 2
2. विदुर-नीति प्रश्नोत्तरी 3
3. स्वास्थ्य चर्चा-लहसुन के अनेक लाभ 4
4. इस जगत् और जीवन का उद्देश्य क्या है? 5
5. डॉ. भीमराव अम्बेडकर ने कहा था स्वामी श्रद्धानन्द अछूतों के महानतम और सबसे सच्चे हितैषी हैं 7
6. महर्षि दयानन्द सरस्वती की 200वीं जन्म जयन्ती 8
7. महान् योद्धा-महाराणा सांगा 9
8. वैदिक धर्म के कुछ सिद्धान्त जिनका प्रचार करता है आर्यसमाज 11
9. ब्रह्मचर्य के दीवाने भगवान्देव (स्वामी ओमानन्द जी) 14
10. समाचार-प्रभाग व शेषभाग 15

आर्य प्रतिनिधि पाक्षिक पत्रिका के प्रसार में सहयोग दें

'आर्य प्रतिनिधि' पाक्षिक उलट-पलटकर रख देने लायक नहीं, बल्कि गंभीरतापूर्वक पढ़ने योग्य पत्रिका है। यदि आप इसके पाठक बनेंगे तो हमें विश्वास है कि पसन्द भी करेंगे और चाहेंगे कि इसे अन्य लोग भी पढ़ें। कृपया अपने जैसे गम्भीर पाठकों से 'आर्य प्रतिनिधि' पाक्षिक पत्रिका की चर्चा करें, उन्हें इसका ग्राहक बनने के लिए प्रेरित करके ऋषि ऋण से अनृण होवें।

'आर्य प्रतिनिधि' पाक्षिक का वार्षिक शुल्क 200/- रुपये एवं आजीवन शुल्क 2000/- रुपये है।

आप उपरोक्त राशि 'आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा' दयानन्दमठ रोहतक के नाम से बैंक ड्राफ्ट/मनीऑर्डर द्वारा भिजवाकर सदस्य बन सकते हैं। -सम्पादक

सम्पादकीय...

वेद-प्रवचन

❑ संकलन–उमेद शर्मा, मन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, दयानन्दमठ, रोहतक

गतांक से आगे....

नाम ही तो शब्द रूप हैं। नाम ही भाषा है। आम एक पदार्थ है उसका नाम **'आम'** है। **'आम'** पद है, उसका **'अर्थ'** अर्थात् वस्तु **'आम'** है। इसी प्रकार संज्ञाएँ, क्रियाएँ, अव्यय से सब नाम हैं और इनके समानान्तर जो भाव हैं, वे उनके वाच्य हैं। कहते हैं आदम से पहले कोई मनुष्य न था, न मनुष्य की भाषा थी, किन्तु खुदा भी था और फरिश्ते भी। वे परस्पर किस भाषा में बोलते थे? संकेत द्वारा हाथों से या या शब्दों द्वारा मुँह से? जिस किसी ने जब कभी यह गाथा बनाई उसने अधिक छानबीन नहीं की। उसे शायद यह भी पता न था कि आगे ये प्रश्न उठेंगे। परन्तु ऋग्वेद का यह मन्त्र (10.71.1) तो इस गाथा से बहुत पुराना है। इसमें **'नामधेयं दधानः'** शब्द पड़ा है। संभव है आदम को शब्द सिखाने की गाथा का आधार वेद की यह प्राचीन उक्ति रही होगी जिसका मूलरूप विकृत हो गया। वेद कहता है कि सृष्टि के आरम्भ में जो मनुष्य उत्पन्न हुए वे आदम की भाँति केवल मिट्टी के लोंदे से नहीं गढ़ लिए गये। केवल उनका शरीर ही भौतिक या पार्थिव था, आत्माएँ तो अज, अजर और अमर ही थीं, जो कल्प-कल्पान्तरों से विकसित होती चली आती हैं। उनके भाव विकसित होते हैं। उन भावों को प्रकाशित करने की प्रेरणा भी स्वाभाविक होती है। इसलिए उनके हृदय में वाच्य और वाचक का सम्बन्ध होता है। वही सम्बन्ध वाणी को प्रेरणा देता है। इसको आप एक दृष्टान्त से समझ सकते हैं। कल्पना कीजिए कि आप एक विद्वान् पुरुष हैं। आपके विचार भी विशद हैं और भाषा भी। आप रात को सो गये। प्रातःकाल उठते ही आप सूर्योदय को देखते हैं। झट आपके मुँह को प्रेरणा (भीतर से एक प्रकार का संचालन) होती है और आप कह उठते हैं **'सूर्याऽयम्'** (यह सूर्य है)। या, यदि आप अंगरेजी पढ़े हैं तो बोल पड़ते हैं, दी सन् इज् शाइनिंग (The sun is shining) यदि आपको यह याद न रहे कि आज के प्रातःकाल से पहले रात थी, रात से पहले दिन था, हम उस दिन में भी थे और एक भाषा का प्रयोग करते थे, तो हमारे लिए यह एक अचम्भे की बात होगी कि आज उठते ही हमको किसने सिखा दिया कि हम **'सूर्योऽयम्'** कहें? इसी प्रकार जो लोग इस सृष्टि से पूर्व किसी अन्य सृष्टि पर दृष्टि नहीं डाल सकते और न यह सोचना चाहते हैं कि आदम पहले भी था, न सही, इस भौतिक रूप में अपितु आत्मरूप में, उनके

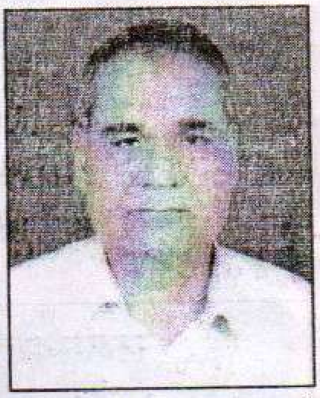

लिए यह समझना कठिन है कि आदम को जो नाम सिखाये गये वे क्या थे? कुरान की भाषा अरबी है। इंजील की भाषा इब्रानी थी। अरबी और इब्रानी से पूर्व मूसा या इब्राहिम या आदम और उसके परिवार हव्वा, काबील, हाबील की क्या भाषा थी, इसका तो कोई पता नहीं है। जिन लोगों में इंजील या कुरान का प्रचार किया गया उनकी शिक्षा भी इतनी विकसित न थी कि ऐसे प्रश्न उठा सकते या इनके समाधान का यत्न करते। जो गाथा जिस रूप में उनके समक्ष आई उसको उन्होंने मान लिया और उसी का प्रसार किया।

वेद कहता है कि ईश्वर ने जो पहले मनुष्य बनाए वे पूर्वकल्पों के विकसित पुरुष थे। उनको भीतर से प्रेरणा हुई कि हर भाव के लिए एक नाम रक्खें और वाणी से उसे व्यक्त करें। ईश्वर ने आँख बनाई तो भीतर से प्रेरणा हुई कि आँख रूप को ग्रहण करे। आप यह प्रश्न नहीं कर सकते कि आँख से उत्पन्न होने के कितने दिनों पश्चात् अपना सम्बन्ध रूप से स्थापित किया। यह आँख को नैसर्गिक प्रेरणा थी, कृत्रिम न थी। जब से आँख है तब से उसमें रूप ग्रहण करने की शक्ति है। आँख को बन्द कर लीजिए, भीतर से प्रेरणा होगी कि रूप देखने के लिए आँख खोली जाए। यदि आँख को आप न भी खोलें पलकों को जबरदस्ती बन्द रखें तो आँख भीतर-ही-भीतर किसी-न-किसी रूप को देखने लगेगी। इसी प्रकार वाणी को भी भीतर से नैसर्गिक प्रेरणा होती है कि कुछ बोले और यदि आप मौन रहे तो भीतर-ही-भीतर वाणी सूक्ष्म और अव्यक्त रूप में बोलती रहती है।

क्रमशः अगले अंक में......

विदुर-नीति प्रश्नोत्तरी

❑ संकलन–कन्हैयालाल आर्य, संरक्षक–आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, रोहतक

गतांक से आगे....

महर्षि व्यास ने इस सूत्र का अर्थ इस प्रकार किया है–संसार में जो कामसुख=कामना की पूर्ति का सुख है वह जो भी दिव्य=स्वर्गीय महान् सुख है, ये दोनों सुख तृष्णा के नाश से प्राप्त हाने वाले सुख के 16वें अंश (भाग) के भी समान नहीं हो सकते।

'सन्तोष' का अर्थ यह है–परिश्रम से प्राप्त फल से अधिक ग्रहण करने की इच्छा न करना। सन्तोष से योगी की तृष्णा का अन्त हो जाता है। इसलिए तृष्णा मूलक समस्त दुःखों के नाश होने से योगी परम सुख को प्राप्त करता है। इसका आशय परमानन्द=अनुभूति से है, जिसको महर्षि दयानन्द ने सूत्रार्थ में स्पष्ट रूप से मोक्ष सुख ही कहा है।

योगदर्शनकार महर्षि पतञ्जलि जी ने योगदर्शन के प्रथम पाद में इसे स्पष्ट कर रहे हैं– ''यह चित्तरूपी नदी पाप और पुण्य दो भागों में बहती है। इस नदी का पाप-मार्ग पर बहने का मूल कारण तृष्णा है और यह तृष्णा कभी पूर्ण नहीं होती। जैसे-जैसे मनुष्य तृष्णा की पूर्ति में व्यस्त रहता है वैसे-वैसे ही यह अधिक बढ़ती जाती है।''

महर्षि मनु ने 2/94 में ऐसे बताया है–

'न जातु कामः कामानामुपभोगेन शाम्यति।'

अर्थात् कामनाओं के भोग से कामना कभी शान्त नहीं होती। उत्तरोत्तर घी से अग्नि की भांति बढ़ती है।

भर्तृहरि ने ठीक ही लिखा है–

'तृष्णा न जीर्णा वयमेव जीर्णाः'

तृष्णा की पूर्ति करने वाले बूढ़े हो जाते हैं, परन्तु तृष्णा कभी बूढ़ी नहीं होती।

भक्त कवि कबीर का दोहा भी इस विषय में प्रसिद्ध है –

'आशा तृष्णा न मिटे, कह गये भक्त कबीर।'

जब व्यक्ति पाप मार्ग को छोड़कर पुण्य-मार्ग पर चलना प्रारम्भ करता है, तो तृष्णा उसे बहुत सताती है, पग-पग पर बाधक बनकर खड़ी हो जाती है। जो योगप्राप्ति का इच्छुकजन इसे जीत लेता है, उसे पूर्णतः सन्तोष होने से उत्युत्तम सुख की प्राप्ति होती है, इसमें कोई सन्देह नहीं।

प्रश्न 21. सभी मृत्यु के ग्रास में जाते हैं विदुर जी इस बात को किस रूप में प्रकट करते रहे हैं?

उत्तर-(1) चाहे कोई व्यक्ति कितना ही महाबलवान् क्यों न हो।

(2) चाहे कोई व्यक्ति कितना ही उदार चरित्र का क्यों न हो।

(3) चाहे कोई व्यक्ति कितने ही धन-धान्य का स्वामी क्यों न हो।

(4) चाहे किसी राजा ने सम्पूर्ण पृथ्वी पर शासन क्यों न कर लिया हो।

(5) चाहे किसी ने विपुल भोगों को भोग लिया हो।

परन्तु मृत्यु के मुख से आज तक कोई नहीं बच सका। प्रत्येक व्यक्ति को अपने सारे वैभव को छोड़ना होगा। अतः हमें अनित्य सुख के लिए धर्म को नहीं त्यागना चाहिए।

महात्मा विदुर जी कहते हैं कि हे धृतराष्ट्र! तुम उन चक्रवर्ती महाबली राजाओं पर दृष्टि डालो, जो धन-धान्य से पूर्ण पृथ्वी पर शासन करके भी अन्त में राज्य और विपुल भोगों को छोड़कर इस लोक से चले गये। तुम्हें भी इसी प्रकार एक दिन इस राज्य और राजभोगों का परित्याग करना है, ये तुम्हारे साथ नहीं जायेंगे। अतः इस थोड़े समय के लिए अनित्य सुख के लिए धर्म का परित्याग क्यों कर रहे हो?

प्रश्न 22. मरने पर मृतक के शरीर का परिवार वाले क्या करते हैं?

उत्तर-(1) मनुष्य अत्यन्त दुःख उठाकर पाले-पोसे अपने पुत्र के मर जाने पर उसे अपने घर से निकालकर बाहर ले जाते हैं।

क्रमशः अगले अंक में...

स्वास्थ्य-चर्चा

लहसुन के अनेक लाभ

गतांक से आगे....

अगर मधुमक्खियों के डंक न होते तो उन्हें बोतलों और बर्तनों में शहद जमा करने पर लगा देते। कुदरत के सुख वही भोग सकता है जो कांटों की परवाह न करके गुलाब तक पहुँचे और डंक से बचकर शहद निचोड़ ले। इसी तरह जो लहसुन की गंध झेल लेगा, उसे इसी जीवन में नया जीवन मिल सकता है। अस्सी साल के बूढ़े को भी यह बीस साल का पट्ठा बना देता है, शर्त यह है कि इसकी दुर्गन्धि का रहस्य समझने की कोशिश की जाये।

इसे दुर्गन्ध देकर क्या परमात्मा ने भूल की है?

आपने अक्सर देखा होगा कि जैसे ही कोई जीव मरने लगता है, वैसे ही चीलें-कौए-गिद्ध उसके इर्द-गिर्द मंडराने लगते हैं। इसी तरह से जब हमारे शरीर की कोशिकाएं (सेल्स) निर्जीव होने लगती हैं तो बूढ़ा शरीर और जर्जर हो जाता है। मुर्दा सेल्स की दुर्गन्ध उसी तरह रोगाणुओं को मिल जाती है जिस तरह मरने वालेजीव की गन्ध चील-गिद्धों को। लहसुन की तीखी गन्ध ही उस समय हमारे प्राण बचाती है और रोग-मौत के मुर्दाखोर जीवाणुकों को भगाकर नये सेल्स पैदा कर देती है। जिस दुर्गन्ध का काम हमारी जान बचाना है, उससे मुंह फेर लेना अपना ही बुरा सोचना है।

लहसुन के बदबू के पांव पकड़ लीजिए!

प्राणरक्षक सांप हो या बन्दर, जब हम उसकी नागदेवता और भगवान् हनुमान कहकर स्तुति करते हैं तो लहसुन की तीखी गन्ध से नफरत किसलिए? यही गंध ही तो हमारी प्राणरक्षा करती है। इसकी तीखी गन्ध वास्तव में रोगनाशक तत्त्व है, जिसे 'अलील डाइसल्फेट' कहते हैं। रोगाणुओं का संहार यही करती है।

कौन कहता है यह तापसी है?

केवल अज्ञानी लोग इसकी तेज गंध से बिदकते हैं। महात्मा गांधी लहसुन के परमभक्त थे। वे कड़कती सर्दी में भी 'लंगोटी वाला बाबा' ही रहे। अन्तिम वर्षों में उनका स्वास्थ्य और भी निखर गया था। बुढ़ापे में भी उनका दिल-दिमाग सात्त्विक रहा और उनका जीवन पवित्रता का प्रतीक माना जाता है। वे बड़ी ललक के साथ लहसुन खाते थे और अहंकार जैसी तमोगुणी वृत्तियों का इनमें लेख नहीं था। वे तो यह कहा करते थे-"लहसुन तो गरीबों की कस्तूरी है।" अगर यहतामसिक पदार्थ होता तो गांधी जी न तो किस मूल्य पर इसे खाने को तैयार होते न इसकी तारीफ़ करते।

बलिहारी जाइये इसकी बदबू के!

दोस्तो! अगर लहसुन में इतनी तीखी गंध न होती तो यह टके भाव न बिकता। इसकी कलियों या फांकों में अगर संतरे की सुगन्ध होती तो एक-एक कली एक-एक क्विंटल सोने के भाव बिकती और हीरे-मोतियों की जगह लहसुन क तुरियाँ स्मगल होने लगती। कुदरत के बलिहारी जाइये कि गुणों के लिहाज से यह इतना सस्ता है कि रास्ते में कहीं पड़ा हो तो लोग इसे उठाने में भी संकोच करते हैं।

लहसुन से मौत भी कांपती है

बादशाही वही है जो जान पर खेलकर भी अपने आश्रितों की रक्षा करे। लहसुन इसलिए बादशाह है, क्योंकि वह जिस शरीर में सम्मान पाता है, उसके अंग-अंग को फौलाद बना देता है। जो सही विधि से इसका सेवन करता है, उससे मौत भी कोसों दूर भागती है।

क्या इसकी तासीर सचमुच गर्म है?

लहसुन शुरू में जोश दिलाता है, मगर बाद में ठण्डक भर देता है। इसकी गर्मी तभी तक महसूस होती है जब तक शरीर में विकार है, उधर रोग शान्त, इधर लहसुन की गर्मी खत्म। चाकू छुरी का काम तो केवल मार-काट मचाना है, तब क्या लोग घरों में चाकू-छूरी रखना ही छोड़ दें? हाँ, दफ्तर-मन्दिर या सभा सोसायटी में जाना हो तो लहसुन कच्चा नहीं खाना चाहिए, क्योंकि इसकी गंध सुहानी नहीं है। इसका सेवन रात के खाने के साथ अत्युत्तम है, क्योंकि इसके बाद पान इलायची खाकर मुंह सुवासित करके थोड़ी चहलकदमी के बाद सोने का समय होता है।

आखिर बदबूदार लहसुन में धरा क्या है?

यह हमारे शरीर में टूट-फूट की मरम्मत करता है।

मुर्दा कोशिकाओं (सेल्स) में नया जीवन भरता है, अर्थात् बूढ़े को जवान बनाता है और मरणशील को जीवित रखता है।

क्रमशः अगले अंक में...

इस जगत् और जीवन का उद्देश्य क्या है?

❑ रामनिवास गुणग्राहक, मो० 075978 94991

आज हमारे बुद्धिजीवी मानव जीवन की हर समस्या का समाधान विज्ञान के माध्यम से करना चाहते हैं। करनां भी चाहिए क्योंकि सामान्यत: विशेष ज्ञान को विज्ञान कहते हैं। जीवन से जुड़ी सभी समस्याओं का समाधान ज्ञान-विज्ञान के द्वारा ही करना उत्तम है मगर आज के विज्ञान की कुछ सीमाएँ और समस्याएँ हैं। आज विज्ञान के क्षेत्र में कुछ विषय और प्रश्न ऐसे हैं, जिन पर विचार करने से आज का विज्ञान बचना चाहता है। यह संसार कब और कैसे बना? इस पर तो विज्ञान अपनी तार्किक परिकल्पनाएँ दे सकता है मगर यह संसार क्यों बना? यह पूछने पर विज्ञान मुंह खोलने को तैयार नहीं। इस प्रकार जगत् में जीवन और चेतन का प्रादुर्भाव कैसे हुआ? इसे लेकर विज्ञान मौन साध लेता है। भाषा के प्रश्न पर आज का विज्ञान जिन अवधारणाओं, कल्पनाओं को सिद्धान्त के रूप में प्रस्तुत करता है, ज्ञान-विज्ञान के क्षेत्र में उनका मूल्य दो कौड़ी का भी नहीं है। कुल मिलाकर जीवन से जुड़ी हुई, हमारे जीवन को दिशा देने वाली महत्त्वपूर्ण उलझनों को सुलझाने में हमारा आज का विज्ञान अभी समर्थ नहीं हुआ है।

क्या हमें नहीं जानना चाहिए कि यह संसार किसने और क्यों बनाया? विज्ञान स्वयं संसार को निर्जीव और सजीव के रूप में दो भागों में बांटता है। सजीव जगत् के बारे में जीवन से जुड़े हुए प्रश्नों पर मौन धारण करने वाला आधुनिक विज्ञान मानो अपने अधूरेपन की घोषणा स्वयं ही कर रहा है। ऐसी स्थिति में हम जीवन से जुड़ी हुई सभी समस्याओं के लिए विज्ञान पर ही निर्भर रहते हैं तो जीवनपथ पर भटक जाने का भय बना रहता है। ऐसे में एक प्रश्न खड़ा होता है कि जिन प्रश्नों के उत्तर विज्ञान देने में असमर्थ है, उन प्रश्नों के उत्तर हमें कहाँ मिलेंगे? इसका उत्तर है- जिन प्रश्नों के उत्तर देने में विज्ञान घबराता है, जीवन से जुड़े हुए उन सभी प्रश्नों के सन्तोषजनक उत्तर धर्म के पास है। धर्म में विज्ञान वाले सभी गुण हैं मगर आधुनिक विज्ञान वाले के पास धर्म जितना गम्भीर, व्यापक और परिपूर्ण ज्ञान कोष नहीं है।

धर्म के बारे में भी हमें प्रचलित परिभाषाओं और मान्यताओं से आगे बढ़कर विचार करना होगा। हमारी सबसे बड़ी समस्या ही यह है कि हम धर्म के सत्य स्वरूप को न तो जानते हैं और न ही जानने की इच्छा रखते हैं। धर्म संस्कृत भाषा का शब्द है तो इसे संस्कृत भाषा के अनुसार ही समझना होगा। संस्कृत साहित्य में धर्म शब्दबहुत व्यापक अर्थ वाला है। महर्षि मनु के अनुसार-"**नहि सत्यात्परो धर्मः नानृतान् पातकं परम्।**" अर्थात् सत्य से बड़ा कोई धर्म नहीं और झूठ से बड़ा कोई पाप नहीं। विज्ञान तर्क के सहारे आगे बढ़ता है तो धर्म तर्क साध्य होने की घोषणा करता है-"**यस्तर्केण अनुसन्धत्ते स धर्मो वेद नेतरः**" अर्थात् जो तर्क से सिद्ध किया जा सके वही धर्म है, उससे भिन्न नहीं। धर्म सत्य है। धर्म तर्क साध्य है तो विचार करो कि धर्म विज्ञान से छोटा या हीन कैसे हो सकता है? विज्ञान तर्क के सहारे सत्य तक पहुँचने की बौद्धिक प्रक्रिया है, धर्म का बड़प्पन यह है कि धर्म सत्य तक पहुँची हुई अनुभूति है। धर्म कहता है-"**इह ब्रवीतु य उ तत् चिकेत्**" (ऋ० 1.35.9) अर्थात् यहाँ वह बोले जो निश्चयात्मक ज्ञान रखता हो। सत्य धर्म का साक्षात् कर लेने के बाद बोलता है। आज का विज्ञान अभी परिपक्व नहीं हो सका। यही कारण है कि विज्ञान के सिद्धान्त, विज्ञान की मान्यताएँ समय-समय पर परिवर्तित होती रही हैं। धार्मिक सिद्धान्त और धर्मसम्बन्धी मान्यताएँ न तो आज तक बदली गई हैं और न बदली जा सकेंगी। तर्क से सिद्ध कर लिया गया सत्य कैसे बदला जा सकता है? इसीलिए महर्षि दयानन्द सरस्वती घोषणा करते हैं कि मैं अपना मन्तव्य अर्थात् धर्म उसी को मानता हूँ जो तीन काल में सबको एक-सा मानने योग्य है।

धर्म विज्ञान से इसीलिए बड़ा है, अधिक विश्वसनीय है, क्योंकि धर्म तर्क साध्य सत्य का ही दूसरा नाम है। महर्षि पतञ्जलि के विश्वप्रसिद्ध ग्रन्थ योगदर्शन पर व्याख्या लिखते हुए महर्षि व्यास लिखते हैं-"**यस्य वक्ता नदृष्टा अनुमितार्थः स आगमः अश्रद्धे अर्थः प्लवते**" अर्थात्

जिसका वक्ता साक्षात् और अनुमान से रहित है वह शास्त्र अन्धकारमय अर्थ का प्रकाश करता है। सरल शब्दों में कहें तो साक्षात् ज्ञान प्राप्त व्यक्ति का लिखा और कहा गया वचन ही धर्म की दृष्टि से मानने योग्य है। धर्म के लिए प्रामाणिक माने गये वेदों के लिए महर्षि व्यास घोषणा करते हैं– **''मूल वनतरि तु दृष्टा अनुमितार्थे निर्विप्लवः स्यात्''** अर्थात् वेदों का मूल वक्ता ईश्वर तो देखे और अनुमान किए अर्थों में मिथ्या ज्ञान से रहित है।

धर्म का मूल वेद को माना गया है। महर्षि मनु के शब्दों में, ''वेदप्रतिपादितो धर्मः अधर्मस्तद्विपर्ययः'' अर्थात् वेद जो कहता है, वह धर्म है, इसके विपरीत अधर्म है। वेद की बात करें तो आज संसार के सारे बुद्धिजीवी ऋग्वेद को संसार का प्राचीनतम ग्रन्थ मानते हैं। संसार का प्राचीनतम ग्रन्थ होने के साथ-साथ वेद ज्ञान-विज्ञान के ऐसे अनुपम भण्डार हैं कि महर्षि मनु से लेकर महर्षि दयानन्द तक सभी ऋषि-मुनियों ने वेद को **सब सत्य विद्याओं का पुस्तक माना है।** सबसे प्राचीन ग्रन्थ होने के साथ वेद की विशेषता यह है कि वेद का एक भी वचन और सिद्धान्त विज्ञान और व्यवहार की कसौटी पर गलत सिद्ध नहीं हुआ है। धर्म ग्रन्थों की यह विलक्षण विशेषता विज्ञान के विकासवाद को शीर्षासन कराने वाली है।

धर्म और विज्ञान पर संक्षेप में मगर तर्क और प्रमाणों के साथ तुलनात्मक चिन्तन करने के बाद हम अपने मूल विषय पर आते हैं कि इस जगत् और जीवन का मुख्य उद्देश्य क्या है? क्योंकि विज्ञान इस पर मुँह खोलने को तैयार नहीं तो ऐसे में इन प्रश्नों के उत्तर पाने के लिए धर्म की शरण में जाना पड़ेगा क्योंकि धर्म का क्षेत्र आज के विज्ञान की अपेक्षा व्यापक और विश्वसनीय है। इसीलिए जीवन का लक्ष्य तय करने वाले इस महत्त्वपूर्ण प्रश्न का सन्तोषजनक उत्तर धर्म से पूछना चाहिए।

धार्मिक साहित्य के क्षेत्र में वेद के बाद सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण माने जाने वाले दर्शन साहित्य का सर्वाधिक लोकप्रिय ग्रन्थ है–**'योगदर्शन'**। योगदर्शन के प्रणेता महर्षि पतञ्जलि जगत् और जीवन के उद्देश्य को समझाते हुए लिखते हैं–'भोगापवर्गार्थं दृश्यम्' (योग० 218) इस जगत् का मुख्य उद्देश्य जीवों के भोग और अपवर्ग अर्थात् मोक्ष उपलब्ध कराना है। संसार का संसार के लिए तो कोई प्रयोजन है नहीं, यह सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड हम जीवों को भोगने के लिए है। हम सब अरबों वर्षों से इसका सुख-दुःख के रूप में कर रहे हैं। वेदविद्या और धर्म के सच्चे स्वरूप का ज्ञान न होने के कारण हम अपने जीवन लक्ष्य को भूल गए हैं।

हम एक बात विचार कर देखें कि प्रत्येक प्राणी स्वाभाविक रूप से सुख चाहता है, दुःख कभी नहीं चाहता, सुख भी हम ऐसा चाहते हैं जो सदा बनी रहे। आज के मनुष्य की सबसे बड़ी बौद्धिक दुर्बलता यह है कि वह सदा बना रहने वाला सुख, सदा बदलते रहने वाले शरीर और संसार से पाना चाहता है। हमारे तथाकथित धर्मगुरुओं ने धर्म और ईश्वर के बारे में हजारों वर्षों से हमारे मन-मस्तिष्क और हमारी सोच को इतना प्रदूषित कर रखा है कि हम धर्म और ईश्वर के बारे में उचित रीति से सुनना-समझना तक भूल बैठे हैं। हम भूल गए हैं कि किसी बड़ी और महत्त्वपूर्ण वस्तु को पाने के लिए बड़ा ही श्रम करना या बड़ा ही मूल्य चुकाना पड़ता है। हमारे तथाकथित धर्मगुरु परमात्मा को चुटकियों में मिला देते हैं। आज ईश्वर प्राप्ति के लिए न ज्ञान की आवश्यकता, न सदाचार की और न साधना व योगाभ्यास की।

धर्म जीवन के दो लक्ष्य तय करता है, **भोग और ईश्वर प्राप्ति**। भोग के रूप में सुख-दुःख तो सब प्राणियों को सहज प्राप्त है। प्रश्न परमात्मा की प्राप्ति का है और उसी के लिए हमें यह मानव तन मिला है। हमें सच में सदा बने रहने वाला सुख चाहिए, हमें सब प्रकार के दुःखों से छूटना है तो पशु-पक्षियों वाले भोगों से ऊपर उठकर, धर्म और ईश्वर का सच्चा ज्ञान प्राप्त करना होगा। वेद परमात्मा के बारे में **'स्वर्गस्य च केवलम्'** की घोषणा करते हैं कि परमात्मा केवल सुखस्वरूप है। केवल सुख पाने और दुःखों से बचने के लिए ईश्वर की आनन्दमयी, अमृतमयी गोद प्राप्त करना ही जीवन का, मानव तन का मुख्य लक्ष्य है। ईश्वर को जानने और पाने में लगने वाला जीवन ही सफल जीवन है।

(आर्यजगत् से साभार)

डॉ. भीमराव अंबेडकर ने कहा था स्वामी श्रद्धानन्द अछूतों के महानतम और सबसे सच्चे हितैषी हैं

❑ रणदीप आर्य, सरपंच सिवाह, मो० 8950119100

स्वामी श्रद्धानन्द सरस्वती आधुनिक भारत में हिन्दुत्व के प्रखर नक्षत्र, स्वतंत्रता संग्राम सेनानी, शिक्षाविद् तथा आर्यसमाज के सन्यासी थे, जिन्होंने स्वामी दयानन्द सरस्वती की शिक्षाओं का प्रचार किया तथा 'स्व' की अलख जगाए रखी। अपना जीवन स्वराज्य, स्वाधीनता, शिक्षा तथा वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार के लिए समर्पित कर दिया।

स्वामी श्रद्धानंद ने गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय जैसी शैक्षणिक संस्थाओं का निर्माण किया तो वहीं शुद्धि आंदोलन में महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा की।

स्वामी श्रद्धानन्द सरस्वती का जन्म 22 फरवरी सन् 1856 को पंजाब प्रान्त के जालंधर जिले के तलवन ग्राम में हुआ था। उनका मूल नाम मुंशीराम विज था, उनके पिता नानकचन्द विज थे। स्वामी दयानन्द सरस्वती के तर्कों और आशीर्वाद से मुंशीराम विज ने अपने आपको वैदिक धर्म का अनन्य भक्त बनाया।

स्वामी श्रद्धानन्द सरस्वती एक कुशल अधिवक्ता थे, परंतु महर्षि दयानन्द के स्वर्गवास के उपरांत उन्होंने स्व-देश, स्व-संस्कृति, स्व-समाज, स्व-भाषा, स्व-शिक्षा, नारी कल्याण, दलितोत्थान, स्वदेशी प्रचार, वेदोत्थान, पाखंड-खंडन, अंधविश्वास उन्मूलन, स्व-धर्म उत्थान जैसे कार्यों को आगे बढ़ाने में अपना सर्वस्व न्यौछावर कर दिया। वैवाहिक जीवन से मुक्त होकर संन्यास धारण कर लिया। पत्रकारिता और हिंदी सेवा में भी उनक अग्रणी स्थान रहा है। भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में उन्होंने महत्त्वपूर्ण योगदान दिया। स्वामी श्रद्धानन्द ने कांग्रेस के प्रमुख नेताओं को जब मुस्लिम तुष्टिकरण की घातक नीति को अपनाते हुए देखा, तो उन्होंने शुद्धि आन्दोलन चलाया। यह आंदोलन कट्टरपंथी मुस्लिम और ईसाई हिन्दुओं को धर्मान्तरण कराने वाले षड्यंत्रों के विरुद्ध मोर्चा था।

हरिद्वार में गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय की आधारशिला रखने वाले स्वामी श्रद्धानन्द सरस्वती ही हैं। मदन मोहन मालवीय और जगन्नाथपुरी के शंकराचार्य स्वामी भारती कृष्णतीर्थ को गुरुकुल में आमंत्रित करके उनके प्रवचन कराए।

स्वामी श्रद्धानन्द ने इस्लाम एवं ईसाई मत से संबंधित अंधविश्वासों का खंडन किया तथा छुआछूत की समस्या को दूर करने के भगीरथ प्रयास किए। उन्होंने बताया कि यह सबसे बड़ा कलंक है। स्वामी श्रद्धानन्द के समर्पण और सफलता को देखते हुए, इस्लामिक चरमपंथियों ने उनके विरुद्ध षड्यंत्र किया और अब्दुल रशीद जैसे व्यक्ति को तैयार कर उनकी हत्या करवा दी।

जिन गाँधी जी को स्वामी श्रद्धानन्द ने सबसे पहले महात्मा कहा और गाँधी जी ने उन्हें बड़ा भाई कहा था। उन्हीं गाँधी ने स्वामी श्रद्धानंद की हत्या करने वाले नर पिशाच, हत्यारे अब्दुल रशीद को अपना भाई बताया था।

वाह रे गाँधी जी? वहीं देखिये, भारतीय संविधान निर्माता डॉ. भीमराव आंबेडकर ने स्वामी श्रद्धानन्द जी के बारे में सन् 1922 में कहा था कि श्रद्धानन्द अछूतों के 'महानतम और सबसे सच्चे हितैषी' हैं। (Dr. Babasaheb Ambedkar Writings & Speeches Vol. 9. Dr. Ambedkar Foundation. 1991. pp. 23–24. ISBN 978-93-5109-064-9.)

वर्तमान परिदृश्य के परिप्रेक्ष्य में पुनः धर्मान्तरण पांव पसार रहा है और 'स्व' की भावना का भी ह्रास हो रहा है। इसके उपचार हेतु स्वामी श्रद्धानन्द के विचारों की उपादेयता आज भी पहले जितनी ही प्रासंगिक है।

संपर्क-म०नं० 2444, दीवाना मार्ग, वार्ड नं०3, सिवाह जिला पानीपत-132108

महर्षि दयानन्द सरस्वती की 200वीं जन्म जयन्ती

❑ डॉ. बिजेन्द्रपाल सिंह, चन्द्रलोक कॉलोनी, खुर्जा, मो० 8979794715

आज सर्वत्र महर्षि दयानन्द सरस्वती की 200वीं जन्म जयन्ती बड़े धूमधाम से मनाई जा रही है। आर्यजन बड़े हर्षोल्लास से इसमें भाग ले रहे हैं। आर्य धर्म से जुड़ा प्रत्येक व्यक्ति चाहता है कि चारों ओर वेद का डंका बजे, जन-जन के हृदय में वेद की भावना जागृत हो, पूरा संसार श्रेष्ठ बने, आदमी के अन्दर मानवता के गुण हो। आर्यों में **'वसुधैव कुटुम्बकम्'** अर्थात् आर्य चाहते हैं पूरी धरती एक परिवार की भांति हो। आर्यसमाज का छठा नियम है-संसार का उपकार करना इस समाज का मुख्य उद्देश्य है अर्थात् शारीरिक, आत्मिक व सामाजिक उन्नति करना। महर्षि दयानन्द सरस्वती ने आर्यसमाजों की स्थापना इसी भावना से की थी। सम्मेलनों के माध्यम से उसी उपकार की वर्षा हो रही है।

महर्षि दयानन्द सरस्वती की 200वीं जन्म जयन्ती पर स्थान-स्थान पर सम्मेलन आयोजित किये जा रहे हैं। भारत सरकार का इसमें सहयोग मिल रहा है। इससे महर्षि दयानन्द सरस्वती की सामाजिक क्रान्ति को बल मिलेगा। जो अन्धविश्वास, कुरीतियां हैं, वह दूर होंगी। आज मूर्तिपूजा, गुरुडमवाद, अनैतिकता, संस्कारहीनता, अवैदिक मान्यताएं धर्मान्तरण, मद्य-मांस भक्षण, अर्धनग्नता, कामुकता, झाड़-फूंक, जादू-टोना जैसे सामाजिक रोग बढ़े जा रहे हैं। अवैदिक पाखण्डी गुरु जनता को भ्रमित कर रहे हैं। ऐसे गुरु बनते जा रहे हैं, जिन्होंने वेद नहीं पढ़े न ही वैदिक संस्कारों को जानते, गौरवशाली इतिहास को नहीं जानते, वैदिक धर्म से अनभिज्ञ हैं। वेदों के विषय में कुछ नहीं जानते, गुरुकुलों के द्वार पर भी नहीं गये, परन्तु समाज में स्त्री-पुरुषों में अपनी पहुँच बना लेते हैं और यह कथित समाज को वेदविरुद्ध तथा हीन बातें बताकर भ्रमित करते हैं। महिलाओं के लिए कहते हैं कि इन्हें गायत्री मन्त्र नहीं बोलना चाहिए। यज्ञोपवीत पहनने का अधिकार नहीं है, अग्निहोत्र में आहुतियाँ नहीं देनी चाहिए। आर्यसमाज इन सब बातों को स्पष्टरूप से समझाता है। इन कथित गुरुओं ने तो समाज को इतना भ्रमित कर रखा था कि यह कहते थे कि स्त्री को पढ़ना और पढ़ाना भी नहीं चाहिए परन्तु आर्यसमाज ने कन्याओं के लिए पाठशाला व विद्यालय खुलवाए। आज कन्या गुरुकुलों से शिक्षा का प्रचार व प्रसार हो रहा है। गुरुकुलों से विदुषी नारियाँ वेद की ज्योति प्रकाशित कर रही हैं। कुरीतियों में आज सर्वाधिक संस्कारहीनता बढ़ रही है। आज विवेक निषेक, पुंसवन, सीमन्तोन्नयन, अन्नप्राशन, नामकरण, कर्णवेध आदि को न जानते न ही सत्य रूप में करते हैं। गृहस्थाश्रम अर्थात् विवाह-संस्कार भी मुख्यरूप से दहेज व भोजन हेतु बड़े-बड़े होटल, रेस्टोरेंट, बारातघरों में जाकर प्रदर्शनी बन गए हैं। दहेज का दिखावा व कन्या वर पक्षों में लेनदेन की बोलियाँ लगती हैं।

आज राजनीति में सुमन्त, चाणक्य, विदुर जैसे वेद के विद्वान्, कुशल नीतिज्ञ, सादा जीवन व्यतीत करने वाले सदाचारी नहीं हैं। प्रशासन व अधिकारियों में भी वैदिक ज्ञान का प्रवेश नहीं हुआ है। जबकि प्रत्येक मनुष्य परिवार, समाज तथा प्रशासन राष्ट्र में वेदज्ञान का समावेश उन्नति के लिए अत्यावश्यक है।

जादू-टोना, फलित ज्योतिष, ग्रहदोष जैसे अन्धविश्वासों को समाज से दूर करना आर्यसमाज का ही कार्य है। अभी भी पाठ्यपुस्तकों में 'आर्य मध्य एशिया से आए' ऐसा पढ़ाया जा रहा है। ऐसी पुस्तकों की छानबीन कर वैदिक पाठ्यक्रम लागू करना चाहिए। शिक्षा में गुरुकुल शिक्षा के पाठ्यक्रम जोड़ने चाहियें। संस्कृत भाषा के महत्त्व की आज आवश्यकता है। नैतिक व चारित्रिक पतन पराकाष्ठा पार कर रहा है। मोबाइल जैसे नेटवर्क के माध्यमों पर ऐसे हीन संवाद एवं चित्रों पर रोग लगानी चाहिए। अश्लीलता को दूर कर कठोर दण्ड का विधान होना चाहिए। अर्धनग्नता जो समाज में भी दिखाई दे रही है उस पर किसी न किसी प्रकार अंकुश होना चाहिए। आज नगरों, महानगरों में पब काकटेल डांसवार जैसी पश्चात्यीकरण की गन्दगी पांव

शेष पृष्ठ 13 पर....

महान् योद्धा—महाराणा सांगा

❑ राजेश आर्य, गांव आट्टा, जिला पानीपत मो० 9991291318

प्रिय पाठकवृन्द! देश स्वतन्त्र होने के बाद भी भारत की सरकार ने पर्यटन स्थल के रूप में केवल उन्हीं भवनों (किले, मीनार, मस्जिद, मकबरे आदि) को प्रसिद्ध व प्रोत्साहित किया है, जिन पर मुस्लिम आक्रान्ताओं के नाम की मोहर लगाई गई है। छोटी-बड़ी सभी परीक्षाओं में आक्रान्ताओं के विषय में ही प्रश्न पूछे जाते हैं। भोले विद्यार्थियों को अपने पाठ्यक्रम में आक्रान्ताओं का ही महिमा मण्डन मिलता है-अलाउद्दीन खिलजी की बाजार नीति, शेरशाह सूरी की सड़क निर्माण, बाबर का साहित्य-प्रेम, जहाँगीर की न्याय की जंजीर, शाहजहाँ की भवन कला, अकबर की उदारता (महानता) आदि। सरकारों व इतिहासकारों के इस षड्यन्त्र का परिणाम यह हुआ कि भारत की पीढ़ियों के सामने से उनके पूर्वज गायब कर दिये गये या उन्हें विकृत रूप में प्रस्तुत किया गया-

बाबर से लेकर औरंगजेब से भी आगे तक की पीढ़ियों को विद्यार्थी किसी मुक्तिदाता मन्त्र की तरह जपते हैं, जबकि उन आक्रान्ताओं से टकराने वाले राणा प्रताप के पुत्र अमरसिंह (जिसने अकबर व जहाँगीर से 17 साल टक्कर ली) को विलासी बताया जाता है, राणा प्रताप के पिता उदयसिंह को कायर व भगोड़ा प्रचारित किया जाता है और राणा प्रताप के दादा राणा सांगा को भारत पर आक्रमण करने के लिए बाबर को बुलाने वाला कहकर उसे घृणित बताया जाता है। अपने विद्यार्थी काल में मैं अपने अध्यापकों व प्राध्यापकों को बड़े गौरव के साथ बाबर की शक्ति का गुणगान करते हुए सुना करता था-वह दो आदमियों को बगल में दबाकर किले की दीवार पर दौड़ लगाता था। पर उन्होंने कभी नहीं बताया कि उसी बाबर से टकराने वाले राणा सांगा के शरीर में घाव के 80 निशान थे। युद्ध में एक आँख, एक हाथ व एक पांव गंवाने के बाद भी बाबर की सेना उसकी वीरता से डरती थी और उसने लड़ने से मना कर दिया था। 1519 ईस्वी में मालवा के सुलतान महमूद खिलजी (द्वितीय) को परास्त कर बन्दी बनाने वाले राणा सांगा ने (तीन मास तक) उसके साथ जिस उदारता व सम्मान का व्यवहार किया तथा उसका राज्य लौटाया, ऐसा उदाहरण किस मुस्लिम शासक का मिल सकता है? यही नहीं, इस उदार महाराणा ने तो अपने शत्रु रहे गुजरात के शहजादे बहादुर खाँ को अपने यहाँ तब शरण दी थी जब उसका भाई सिकन्दर खाँ उसके खून का प्यासा बना हुआ था (1824 ई०), पर राणा सांगा की मृत्यु (1528 ई०) के बाद इसी कृतघ्न बहादुर शाह ने मेवाड़ पर दो बार (1533,1535 ई०) आक्रमण कर विनाशलीला की।

हिन्दुओं को अपमानित करने वाला जजिया कर हटाने के कारण अकबर की उदारता के गीत गाने वालों को महाराणा सांगा की उदारता (राजनीतिक अदूरदर्शिता) दिखाई नहीं दी। आमेर के लाचार राजा भारमल की पुत्री हीरकवर (बाद में मरियम उज्जमानी) को जोधाबाई बनाकर अकबर से उसके प्रेम की झूठी कहानियाँ गढ़ने वाले बेशरम फिल्म व नाटक कलाकारों को युद्ध में पकड़कर लाई गई रहीम खान की औरतों को ससम्मान वापस भेजने वाले महाराणा प्रताप का उज्ज्वल चरित्र दिखाई नहीं दिया। दो-चार भवनों के नाम लिखकर शाहजहाँ को इंजीनियर बादशाह बताने वाले अन्धों को महाराणा कुम्भा (राणा सांगा के दादा) द्वारा बनवाये गये मेवाड़ के 32 किले (विशेष कुम्भलगढ़ का किला, चित्तौड़ का विजय स्तम्भ आदि) दिखाई नहीं दिये।

इन्हें कैसे दिखाई देते, जब इतिहासकार न होते हुए भी भारत के कम्युनिस्ट प्रधानमन्त्री (नेहरू जी) इतिहास में टांग अड़ाते हुए हिन्दुस्तान की कहानी में लिख गये- ''बाबर की शख्सियत दिलकश है, वह नई जागृति की ठीक-ठीक नुमाइन्दगी करने वाला शहजादा है, जो साहसी और बहादुर है और कला, साहित्य और रहन-सहन का प्रेमी है। उसके पोते अकबर में और भी आकर्षण है और गुणों में भी वह उससे कहीं बढ़कर है। योग्य सेनापति की हैसियत से वह साहसी और दिलेर है, फिर भी उसमें बड़ी दया और कोमलता भी है। वह आदर्शवादी और सपनों का देखने वाला है, फिर भी वह कार्यक्षेत्र का आदमो है...।''

(पृ० 300)

फिर नेहरू जी इस महान् देवता से लड़ने वाले महाराणा सांगा का नाम भी कैसे लिख सकते थे। बाद में उनके निर्देश पर लिखने वाले इतिहासकार भी इन हिन्दू वीरों को संकीर्ण मानसिकता वाला बताकर इन्हें पीछे धकेलने लगे। उसी षड्यन्त्र के अन्तर्गत भारत के इस महान् योद्धा के विषय में लिखा गया कि राणा सांगा ने दिल्ली के सुलतान इब्राहिम लोदी को हराने के लिए बाबर की सहायता मांगी अर्थात् बाबर को भारत पर आक्रमण करने के लिए बुलाया।

श्री हरविलास सारड़ा ने 1924 ई० में 'महाराणा सांगा' पुस्तक में लिखा–''1517 ई० में सुलतान सिकन्दर लोदी की मृत्यु के पश्चात् उसका पुत्र इब्राहिम गद्दी पर बैठा। ....वह एक सेना सज्जित कर मेवाड़ की ओर चला। महाराणा इसका सामना करने को आगे बढ़े और दोनों सेनायें हाडावटी (हाडौती) की सीमा पर के खतौली गाँव के पास मिलीं। दिल्ली की सेना राजपूतों की मार को न सह सकी और दोपहर (छह घण्टे) की लड़ाई के पश्चात् युद्धस्थल से भाग गई। सुलतान भी भाग गया और एक लोदी शाहजादे को राणा सांगा ने कैद कर लिया। यह शाहजहाँ थोड़े दिन पश्चात् दण्डस्वरूप कुछ धन देने पर छोड़ दिया गया। इस लड़ाई में तलवार के वार से महाराणा का बायां हाथ कटा और एक तीर ने उन्हें जन्मभर के लिए लंगड़ा बना दिया।'' (पृ० 52)

''(दूसरी बार) सुलतान इब्राहिम की सेना के मुख्य सेनापति....महाराणा पर चढ़ाई में प्रधान सेनापति मियां मक्खन के साथ थे। जब यह सेना महाराणा के प्रदेश में घुसी तो महाराणा राजपूतों को लेकर आगे बढ़े। ज्यों ही धौलपुर के पास दोनों फौजें एक दूसरे पर निकट आईं त्यों ही मियां मक्खन ने व्यूह-रचना की, ...राजपूत अपने सदा के साहस के साथ आगे बढ़कर सुलतान की सेना पर टूट पड़े और थोड़ी ही देर में शत्रु को भगा दिया। बहुत से वीर और योग्य पुरुष शहीद बना दिये गये और दूसरे तितर-बितर कर दिये गये। यह लड़ाई सन् 1518 ई० के आस-पास हुई। राजपूतों ने सुलतान की भागती हुई सेना का बयाना तक पीछा किया।'' (पृ० 56)

डॉ० गोपीनाथ शर्मा ने 'राजस्थान का इतिहास' में लिखा है–''बाबर ने धौलपुर की लड़ाई में राजपूतों की विजय होना लिखा है जो पिछली तवारीखों की तुलना में विश्वसनीय है। ...इसमें सन्देह नहीं कि महाराणा सांगा ने इन (दिल्ली, माण्डू तथा गुजरात के) सुलतानों को बारी-बारी से पराजित कर अपने साहस और शौर्य का परिचय दिया था। इस विजयों से उत्तरी भारत का नेतृत्व भी उसे प्राप्त हो गया। ...दिल्ली के शासक को परास्त करने से राजनीतिक धुरी मेवाड़ की ओर घूम गई और सभी शक्तियाँ, देशी और विदेशी, सांगा की शक्ति को मान्यता देने लगीं। मेवाड़ की शक्ति की यह चरमसीमा थी। हमारे शब्दों में, राणा इन विजयों में राजपूत संगठन का नेता स्वीकार कर लिया गया था और उसके व्यक्तित्व में हिन्दू शौर्य की आभा देदीप्यमान हो चली थी।'' (पृ० 56)

क्रमशः अगले अंक में....

त्रिवार्षिक चुनाव सम्पन्न

आर्यसमाज लोहारू का त्रिवार्षिक चुनाव दिनांक 17.12.2023 को हुआ। इसमें सभी साधारण सदस्यों ने पिछली कार्यकारिणी का कार्यकाल बहुत अच्छा व सराहनीय रहा। इसके बाद श्री धनपत ठेकेदार ने प्रधान पद के लिए श्री पवन कुमार आर्य का नाम रखा एवं साथ ही पुरानी कार्यकारिणी को तीन वर्ष के लिए फिर से बनाने का प्रस्ताव रखा। सभी साधारण सदस्यों ने इसका समर्थन किया। इस प्रकार सर्वसम्मति से त्रिवार्षिक चुनाव सम्पन्न हुआ। संरक्षक–श्री छत्रसिंह शेखावत, प्रधान–श्री पवन कुमार आर्य, मन्त्री–डॉ० ब्रह्मदेव आर्य, कोषाध्यक्ष– श्री हवासिंह आर्य, लेखा-निरीक्षक–श्री बलदेव आर्य।

आवश्यक सूचना

'आर्य प्रतिनिधि' पाक्षिक के सभी ग्राहकों को सूचित किया जाता है कि जिन ग्राहकों का जो भी बकाया शुल्क बनता है, वह बकाया शुल्क सभा कार्यालय में जमा करें या मनीऑर्डर द्वारा भेजने का कष्ट करें ताकि हम आपकी पत्रिका समय पर भेजते रहें। शुल्क भेजते समय आप ग्राहक संख्या व मोबाइल नंबर अवश्य लिखें।

–रघुवरदत्त, पत्रिका लिपिक, 7206865945

वैदिक धर्म के कुछ सिद्धान्त जिनका प्रचार करता है आर्यसमाज

❑ मनमोहन कुमार आर्य, 196 चुक्खूवाला-2, देहरादून-248001, मो० 9412985121

वैदिक धर्म विश्व का सबसे प्राचीन धर्म व मत है। वैदिक धर्म का प्रचलन वेदों से हुआ है। वेद सृष्टि के आरम्भ में अन्य सांसारिक पदार्थों की ही तरह ईश्वर से उत्पन्न हुए। परमात्मा सत्य, चित्त व आनन्द स्वरूप है। ईश्वर के इस स्वरूप को सच्चिदानन्दस्वरूप कहा जाता है। चेतन पदार्थ ज्ञान व क्रिया से युक्त होते हैं। ईश्वर सच्चिदानन्दस्वरूप सहित सर्वव्यापक, अनादि, नित्य, अमर तथा अविनाशी सत्ता है। ईश्वर सर्वज्ञ है जिसको सृष्टि बनाने व पालन करने का ज्ञान अनादि काल से है। यह ज्ञान न घटता है न बढ़ता है। पूर्ण ज्ञान में घटना व बढ़ना नहीं होता। मनुष्य एकदेशी, ससीम तथा जन्म व मरणधर्मा होने से अल्पज्ञ है। इसे ज्ञान प्राप्ति में ईश्वर सहित वेदज्ञान व माता, पिता एवं आचार्यों की आवश्यकता होती है। इनके बिना हम ज्ञानवान तथा सत्य व यथार्थ तथ्यों सहित प्रकृति के रहस्यों को जानने वाले नहीं होते। वेद ज्ञान की सहायता तथा ईश्वर की उपासना से मनुष्य ज्ञानवान होता है। मनुष्य को ज्ञानवान बनाने में माता, पिता, आचार्यों तथा ऋषियों के सत्य ज्ञान से युक्त ग्रन्थों का विशेष महत्त्व होता है। इन ग्रन्थों का अध्ययन कर मनुष्य अपनी बुद्धि से सत्यासत्य का निर्णय कर सकता है। संसार में ईश्वर व ऋषियों के अतिरिक्त मनुष्यों द्वारा रचित अनेक ग्रन्थ उपलब्ध हैं। मनुष्य के अल्पज्ञ होने से उसकी सभी रचनायें निर्दोष नहीं होती हैं। बड़े-बड़े महापुरुष भी अल्पज्ञ होते हैं। इस कारण उनके ग्रन्थों में विद्यमान कुछ मान्यतायें विद्या व ज्ञान की दृष्टि से वेदविरुद्ध होने के कारण सत्य न होकर असत्य वा विष मिश्रित अन्न के समान होती हैं। अत: ईश्वरीय ज्ञान वेदों को स्वत: प्रमाण मानकर हमें अपने जीवन में किसी भी ग्रन्थ की मान्यता की परीक्षा कर उसे स्वीकार व अस्वीकार करना चाहिये और सत्य को ही अपनाना चाहिये। वेद सब सत्य विद्याओं के ग्रन्थ हैं। वेदानुकूल सिद्धान्त व मान्यतायें ही आचरण करने व मानने योग्य होती हैं। सभी प्रचलित मतों की मान्यतायें में एकता व समानता न होने का कारण उनकी मान्यताओं का अविद्यायुक्त होना होता है। ऋषि दयानन्द ने सत्यार्थप्रकाश में वेदों की सत्य मान्यताओं का प्रकाश करने के साथ मत-मतान्तरों की अविद्यायुक्त मान्यताओं का दिग्दर्शन कराया है। इससे विदित होता है कि वेद ही स्वत: प्रमाण है जिसकी सभी मान्यतायें ईश्वरप्रदत्त होने से प्रमाण हैं तथा अन्य ग्रन्थों की वही मान्यतायें स्वीकार करने योग्य हैं जो पूर्णत: वेदानुकूल हों।

वैदिक धर्म के मुख्य सिद्धान्तों व मान्यताओं पर विचार करते हैं तो इसका प्रमुख सिद्धान्त त्रैतवाद का सिद्धान्त प्रतीत होता है। त्रैत से अभिप्राय ईश्वर, जीव तथा प्रकृति इन तीन सत्ताओं से है। हमारा यह संसार इन तीन पदार्थों का ही समन्वित रूप है। ईश्वर इन्द्रियों से अगोचर होने के कारण आंखों से दिखाई नहीं देता। उसमें गन्ध न होने से उसे सूंघ कर अनुभव नहीं किया जा सकता। वायु के समान न होने के कारण उसका स्पर्श भी नहीं होता। वह एक अनादि, नित्य, निराकार, सर्वव्यापक, सर्वज्ञ, सर्वशक्तिमान, धार्मिक स्वभाव से युक्त, दयालु, कृपालु, जीवों के प्रति पितृ, मातृ, बन्धु, सखा आदि सम्बन्धों से युक्त सत्ता है। ऋषि दयानन्द के सत्यार्थप्रकाश, ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका, आर्याभिविनय तथा ऋग्वेद-यजुर्वेद भाष्य का अध्ययन कर ईश्वर के सत्यस्वरूप को जाना जा सकता है। सर्वव्यापक व सर्वान्तर्यामी होने से वह हमारे बाहर व भीतर विद्यमान है। वह हमें सत्प्रेरणायें करता रहता है। निर्दोष अन्त:करण वाले मनुष्यों को उसकी प्रेरणाओं की अनुभूति आनन्द व उत्साह तथा बुरे काम करने पर भय, शंका व लज्जा के रूप में अनुभव होती है। हर निर्मित पदार्थ के निमित्त व उपादान दो प्रमुख कारण होते हैं। इस समस्त सृष्टि व इसके समस्त पदार्थों का एक ईश्वर ही निमित्त कारण है तथा अनादि व नित्य सूक्ष्म प्रकृति उपादान कारण है। ईश्वर व प्रकृति से इतर चेतन जीवों का भी संसार में अनादि काल से अस्तित्व है। यह सब नाशरहित

अजर व अमर पदार्थ हैं। जीव अल्पज्ञ एवं जन्म व मरणधर्मा हैं। इन्हीं के लिये परमात्मा इस सृष्टि को बनाते व पालन करते हैं। जीव अल्पज्ञ चेतन सत्ता है। अत: यह मनुष्य आदि योनियों में जन्म प्राप्त कर कर्म करते हैं जिसका जन्म-जन्मान्तर में फल भोगने के लिये इनका नाना योनियों में जन्म होता है। इसी से पुनर्जन्म का सिद्धान्त भी सिद्ध होता है। मनुष्य व अन्य सभी योनियों में जीवों की उत्पत्ति व जन्म का कारण उसके पूर्वजन्म के कर्म ही सिद्ध होते हैं। जीव अनादि व अनन्तकाल तक विद्यमान रहने से युक्त स्वरूप वाले हैं। इनके कर्मों व अस्तित्व का कभी अन्त नहीं होगा। अत: इनके जन्म अनन्त काल तक होते रहेंगे। संसार में ईश्वर, जीव व प्रकृति का अस्तित्व सत्य सिद्ध है। कोई मत व सम्प्रदाय इन वैदिक मान्यताओं को मानता है तो अच्छी बात है और यदि कोई अज्ञानतावश किसी सत्य वैदिक सिद्धान्त को नहीं मानता तो इसका कारण उनका अज्ञान वा अविद्या ही कही जा सकती है।

वेद जीवों के जन्म का कारण उसके कर्म-बन्धनों को बताते हैं। जब यह बन्धन क्षीण हो जाते हैं तो जीवात्मा का मोक्ष हो जाता है। मोक्ष आवागमन वा जन्म व मरण से दीर्घावधि के लिये मुक्ति को कहते हैं। मोक्ष में जीवन को पूर्ण सुख व आनन्द प्राप्त होता है। यह उसके शुभ कर्मों व साधना का पुरस्कार व प्रतिफल होता है। इसका विस्तार ऋषि दयानन्द के सत्यार्थप्रकाश ग्रन्थ में देखा जाता है। मोक्ष एक सत्य सिद्धान्त है। इसकी पुष्टि सत्यार्थप्रकाश के नौवें समुल्लास में प्रस्तुत तथ्यों व तर्कों के आधार पर होती है। सत्य प्रेमी व जिज्ञासु बन्धुओं को सत्यार्थप्रकाश का मोक्ष विषयक प्रकरण अवश्य पढ़ना चाहिये।

वेदों का एक प्रमुख सिद्धान्त पुनर्जन्म की मान्यता है। आत्मा जन्म व मरणधर्मा है। इसका इसके कर्मों के अनुसार जन्म व शरीर के जर्जरित होने पर मरण होता रहता है। मृत्यु के बाद जन्म होना सुनिश्चित होता है। गीता नामक ग्रन्थ में कहा है कि जन्म लेने वाले प्राणी की मृत्यु निश्चित होती है। इसी प्रकार मृत्यु को प्राप्त आत्मा का जन्म होना भी ध्रुव अर्थात् निश्चित है। हम संसार में भिन्न-भिन्न गुण, कर्म व स्वभाव वाले शिशुओं के जन्म को देखकर व उनकी पृथक्-पृथक् भिन्न क्रियाओं को देखकर उनके पूर्वजन्म के संस्कारों का अनुभव करते हैं। शिशु माता का दुग्ध पीता है। इसका कारण भी उसका पूर्वजन्म का संस्कार होता है। इसी प्रकार से नवजात व अल्प आयु के शिशुओं का हंसना व रोना तथा एक ही परिवार में समान पोषण मिलने पर एक का बुद्धिमान तथा किसी का अल्प बुद्धि वाला होना, किसी का धार्मिक प्रकृति का तथा किसी का धर्म विपरीत आचरण की प्रकृति का होना मनुष्य के पुनर्जन्म को सिद्ध करते हैं। पुनर्जन्म पर ऋषि दयानन्द के अनेक तर्कपूर्ण वचन भी उपलब्ध हैं। अनेक विद्वानों ने भी पुनर्जन्म पर उत्तम ग्रन्थों की रचना की है। कुछ विद्वानों ने पुनर्जन्म पर शोध उपाधि पीएचडी आदि भी प्राप्त की हैं। इन सबसे पुनर्जन्म का सिद्धान्त सत्य सिद्धान्त सिद्ध होता है।

वेद व वैदिक साहित्य में हमें पंचमहायज्ञों को प्रतिदिन करने का एक तर्कसंगत एवं लाभकारी सिद्धान्त भी प्राप्त होता है। यह पांच कर्तव्य हैं-1. ईश्वरोपासना वा सन्ध्या, 2. देवयज्ञ अग्निहोत्र, 3. पितृयज्ञ, 4. अतिथियज्ञ एवं 5. बलिवैश्वदेव यज्ञ। सन्ध्या ईश्वर की प्रात: व सायं उपासना को कहते हैं। इस उपासना के समर्थन में भी ऋषि दयानन्द के अनेक तर्कपूर्ण एवं सारगर्भित कथन उपलब्ध हैं। उनके अनुसार ईश्वर के सभी जीवों पर अनादि काल से अनन्त उपकार हैं। ईश्वर ने हम जीवों के लिये ही इस सृष्टि का निर्माण किया तथा हमें मनुष्य का जन्म दिया है। अनादि काल से हम जन्म लेते आ रहे हैं। बार-बार हमारा पुनर्जन्म ईश्वर की कृपा से ही होता है। हमें जो सुख प्राप्त होते हैं उनका आधार व देने वाला भी परमेश्वर ही है। अत: हमें ईश्वर के उपकारों के लिए कृतज्ञता प्रकट करने के लिये उसकी उपासना अवश्य करनी चाहिये। उपासना से जीवात्मा की उन्नति होती है। मनुष्य को सुख प्राप्त होने सहित उसका परजन्म भी सुधरता है। ऐसे अनेक लाभ ईश्वर की उपासना से होते हैं। मनुष्य का दूसरा प्रमुख कर्तव्य देवयज्ञ अग्निहोत्र है। इससे वायु शुद्धि सहित रोग किटाणुओं का नाश होने से मनुष्य स्वस्थ रहते हैं। कुछ रोग दूर भी होते हैं। यज्ञ श्रेष्ठतम कर्म है। इसको करने से मनुष्य को पुण्य का लाभ होता है जिससे हमें जन्म जन्मान्तर मे सुख मिलता है। मनुष्य को पितृयज्ञ के अन्तर्गत माता, पिता तथा वृद्धों की सेवा-सुश्रूषा करनी होती है। अतिथि यज्ञ में विद्वान् नि:स्वार्थ स्वभाव के

अतिथियों का आदर-सत्कार व पोषण करना होता है। बलिवैश्वदेव यज्ञ में मनुष्येतर प्राणियों के प्रति प्रेम व सद्भाव रखते हुए उन्हें यथाशक्ति भोजन कराना होता है। पंच-महायज्ञों का विधान होने से भी वैदिकधर्म संसार का महानतम धर्म एवं संस्कृति है। इसके पालन से ही मनुष्य का वर्तमान, भविष्य तथा परजन्म सुधरता है। ईश्वर की कृपा व सहाय प्राप्त होता है। आत्मा की उन्नति सहित सुख व मोक्ष में भी यह पंचमहायज्ञ कारण व सहायक होते हैं।

वैदिक धर्म में गुण, कर्म व स्वभाव के आधार पर वर्णव्यवस्था का विधान है। वर्तमान में प्रचलित जन्मना जाति व्यवस्था का समर्थन वेद व ऋषियों के साहित्य से नहीं होता। यह व्यवस्था मध्यकाल में अज्ञानता तथा विदेशी राज्य की विवशताओं के कारण प्रचलित हुई थी। इसका कोई उचित कारण व महत्त्व नहीं है। इससे मनुष्य-मनुष्य के बीच भेदभाव व पक्षपात होता है। वेद मनुष्यों में पक्षपात के सर्वथा विरुद्ध हैं। वेद तो मनुष्य मात्र को वेदों का ज्ञानी, विद्वान् व विदुषी बनने-बनाने की प्रेरणा करते हैं। वेदों का अध्ययन कर सभी स्त्रियां व पुरुष योग्यता को प्राप्त कर ऋषि, ऋषिकायें, यज्ञ के ब्रह्मा, पुरोहित, वेदों के प्रचारक तथा आत्म व ईश्वर साक्षात्कार करने वाले योगी बन सकते हैं। वेद अधिकाधिक विद्याओं को पढ़कर पूर्ण युवावस्था में युवक व युवती के विवाह के समर्थक हैं। वेदों से बाल-विवाह का समर्थन न होकर निषेध होता है। विधवाओं के प्रति भी वेदों व वैदिक साहित्य में कोई पक्षपात से युक्त वचन व मान्यता नहीं है। वेदों व वैदिक साहित्य में शूद्रों को भी द्विजों के साथ मिलकर उनके कार्यों में सहयोग करने के विचार प्राप्त होते हैं। वृद्ध शूद्र को भी सभी का पूज्य माना जाता है। शूद्रों की गणना भी वैदिक मान्यता के अनुसार आर्यों में होती है। आर्य श्रेष्ठ गुण, कर्म व स्वभाव से युक्त मनुष्यों को कहा जाता है।

वेद सब सत्यविद्याओं का पुस्तक है। वेदों में मनुष्य के सभी कर्तव्य व कर्मों का विधान किया गया है। वेद ईश्वर से उत्पन्न होने से एकमात्र सबके लिये मान्य धर्मग्रन्थ हैं। वेदों की आज्ञाओं का पालन करना सभी मनुष्यों का कर्तव्य धर्म है। जो मनुष्य इसको मानेगा उसका जन्म-जन्मान्तर में परमात्मा कल्याण करेंगे। सभी मनुष्यों को वेदों का अध्ययन कर परम धर्म वेद का पालन करना चाहिये। वेदों से दूर होकर हम अज्ञानता व अन्धविश्वासों को प्राप्त होते हैं। वैदिक कर्तव्यों की पूर्ति से हमें जो सुख व परजन्म में उन्नति होती है, वेदों से दूर रहने पर हम उससे वंचित हो जाते हैं। हमने इस लेख में कुछ वैदिक मान्यताओं की संक्षेप में चर्चा की है। यदि यह लेख किसी को उपयोगी लगता है तो इसमें हमारे श्रम की सार्थकता है।

महर्षि दयानन्द सरस्वती की... पृष्ठ 8 का शेष...

पसार रही है। समाज के लिए यह पश्चिमी कराज घातक है। लिव इन रिलेशन, लवजेहाद जैसे रोग समाज में पनप रहे हैं। यह नई पीढ़ी के लिए कलंक है।

मजार, पीर-पैगम्बरों की पूजा, वहां चादर चढाना एक बड़ी भ्रम वाली कुरीति है। आर्यसमाज का उद्देश्य इन कुरीतियों को समाज से निकालना है। सम्मेलनों का उद्देश्य तो यही है। इसी से संसार का उपकार होगा। जब तक हम अपने अन्दर से समाज से इन बुराइयों, कुरीतियों को नहीं निकालते तब तक हम मनुष्य कहलाने के अधिकारी ही नहीं कहे जा सकते।

महर्षि दयानन्द सरस्वती ने दण्डी स्वामी विरजानन्द सरस्वती की दक्षिणारूपी आज्ञाओं का पूर्णरूपेण पालन किया और इन्हीं कार्यों को करने के लिए इन्होंने आर्यसमाजों की स्थापना की थी। आज वैदिक धर्म के अनुयायियों का दायित्व है कि महर्षि दयानन्द सरस्वती के कार्यों को आगे बढ़ाएं व क्रान्तिकारी स्तर पर करते रहें।

सम्मेलनों में ग्रामीण अंचल से, पिछड़े वर्ग एवं ऐसे समाज को भी निमन्त्रित करना चाहिए जो आर्य धर्म व संस्कारों से वंचित हैं। अन्धविश्वास व कुरीतियों में फंसे हुए हैं। ऐसा वर्ग जो गुरुडम के जाल में फँसा है, ऐसा वर्ग जो ईश्वर को न मानकर धन की अत्यधिक आसक्ति में मोहमाया के चक्र में फँसा है, मूर्तिपूजा को ही सब कुछ समझता हो, वेदों से दूर हो, वैदिक शिक्षा से अनभिज्ञ हो, ऐसे वर्ग को अधिक से अधिक निमन्त्रण देना चाहिए और क्षेत्र में सम्मेलन रखे जायें जहाँ वेद की मान्यताओं से दूर वाला समाज हो, वेद का प्रकाश मानवमात्र के लिए है, सभी के लिए है, संसारभर के लिए है।

ब्रह्मचर्य के दिवाने आचार्य भगवान्देव (स्वामी ओमानन्द जी)

आचार्य जी ने अपने यौवनकाल से ही एक ऊंचे और तपस्वी का जीवन व्यतीत किया है । नियम और व्रतों का पालन जिस श्रद्धा और कड़ाई से ये करते हैं वैसा हमने आज तक दूसरे किसी व्यक्ति को नहीं करते देखा। जिन लोगों ने आचार्य जी को निकट से देखा है वे इस बात की सत्यता से भलीभांति परिचित होंगे। सन् 1950 से पूर्व आचार्य जी गुरुकुल झज्जर के पुराने कुएं के पास बनी गुफा में कई घण्टे ध्यानमग्न रहते थे। इनका यह अभ्यास कई वर्षों तक चलता रहा। एक बार आपको सांप ने भी काट लिया था किन्तु नमक व मीठा न खाने का स्वभाव होने से उसका विशेष प्रभाव नहीं हुआ। जिस तरह का त्यागी, तपस्वी और व्रती जीवन इनका है उसी तरह की दिनचर्या और जीवन की अपेक्षा ये ब्रह्मचारियों से भी रखते रहे हैं। वास्तव में ब्रह्मचर्य व्रत का पालन तलवार की धार पर चलने के समान तप है। यह तभी सफल होता है जब व्यक्ति हर क्षण इसके लिये चौकन्ना रहे।

चरित्र वह थाती है जो व्यक्ति व राष्ट्र को आगे ले जाती है। ब्रह्मचर्य उसकी आधारभूमि है। इस कारण आचार्य जी ने गुरुकुल संभालने के कुछ दिन बाद ही जगह-जगह पर स्कूल व कालेजों में भी ब्रह्मचर्य शिक्षण शिविर लगाने प्रारम्भ कर दिये थे। सन् 1947 की डावांडोल स्थिति के कारण तथा स्वयं उधर लगे रहने के कारण इनके शिविरों के कार्य में व्यवधान आ गया था किन्तु इन्होंने अब फिर वह नये सिरे से आरम्भ किया। ब्रह्मचारी हरिशरण जी इन शिविरों के आयोजन में प्रमुख भूमिका निभाते थे। वे स्वयं व्यायाम, आसन और लाठी, भाला आदि प्रशिक्षार्थियों को सिखलाते और आचार्य जी महाराज उनको उपदेश देते और ब्रह्मचर्य व चरित्र का महत्त्व बतलाते। शिविरार्थियों को नियमित समय पर प्रातः चार बजे उठाना, शौचादि से निवृत हो व्यायाम व संध्या यज्ञादि कराना सब बहुत नियमित होता। आचार्य जी के तेजस्वी व्यक्तित्व और ओजस्वी वाणी का मोहक प्रभाव होता। जो एक बार इन शिविरों में आ गया वह सदा के लिये इनका अनुयायी बन गया। इन शिविरों में ब्रह्मचर्य की शिक्षा देकर नवयुवकों को सच्चरित्र बनाया और उनको नैतिक उन्नति के मार्ग पर लगाया। इस शिक्षा का प्रभाव केवल विद्यार्थियों पर ही नहीं अपितु अध्यापक, प्रधानाध्यापक और प्रिंसिपलों पर भी बहुत अधिक पड़ा। उस समय ऐसे अनेक स्कूल थे जो इसी प्रभाव के कारण गुरुकुलों की तरह चलते थे। इमलौटा आदि स्कूलों में गुरुकुलों जैसे ही नियम बन गये थे। दिल्ली, राजस्थान व हरयाणा में सैंकड़ों ऐसे अध्यापक हैं जिन्होंने इन शिविरों में प्रशिक्षण लेकर हजारों विद्यार्थियों के जीवन सुधारे हैं। ये सब अध्यापक आचार्य जी के विशेष सहायक बने और इन्होंने इनका सदा भरपूर साथ दिया। इन शिविरों के कारण पढ़े-लिखे लोगों की एक ऐसी शक्ति (फोर्स) खड़ी हो गई जो हर कार्य में सदा आगे रहती। इनमें श्री सुखदेव शास्त्री आसन, मास्टर रघुवीरसिंह जी छारा, मा० लज्जेराम जी समसपुर, मा० हरिसिंह ठींठ मिलकपुर, मा० महासिंह किड़हौली, स्व० पं० शिवकरण जी डोहकी, मा० भूपसिंह भागी, मा० राजेराम जी खातीवास, पं० नानकचन्द जी डालावास, सरदार इन्द्रसिंह जी, मा० कुन्दनसिंह जी रासीवास, मा० सरदारसिंह ठींठ मिलकपुर, प्रिंसिपल भगवानसिंह फरमाणा, प्रिंसिपल होशियारसिंह जी बाजीतपुर, मा० रोहतास माजरा डबास दिल्ली आदि विशेष उल्लेखनीय हैं।

इन शिविरों के कार्यक्रम को स्थायित्व देने और इनमें आने वाले प्रशिक्षणार्थियों के स्वाध्याय के लिए आचार्य जी ने 'ब्रह्मचर्य के साधन' (11 भाग) पुस्तक लिखी। इनकी 'ब्रह्मचर्यामृत' नामक पुस्तक तो इतनी अधिक लोकप्रिय हुई कि उसके लगभग दस संस्करण निकालने पड़े। लाखों नवयुवकों ने उसको पढ़ा और मार्गदर्शन पाया है। इन शिविरों

शेष पृष्ठ 16 पर....

महर्षि दयानन्द सरस्वती की 200वीं जन्म जयन्ती वर्ष के उपलक्ष्य में पहुँचने पर आर्य जनता का हार्दिक धन्यवाद!

अमर बलिदानी काकोरी काण्ड के शहीदों रामप्रसाद बिस्मिल, अशफाक उल्ला खां, ठाकुर रोशनसिंह व राजेन्द्रनाथ लाहिड़ी की स्मृति में एक आर्य महासम्मेलन '**नशा मुक्त हरियाणा अभियान**' को लेकर 17 दिसम्बर 2023 को 10 बजे से 2 बजे तक सूर्या गार्डन गोहाना रोहतक रोड में किया गया। कार्यक्रम का संयोजन स्वामी नित्यानन्द सरस्वती ने किया तथा अध्यक्षता स्वामी वेदात्मवेश (महाराष्ट्र) ने की। स्वागताध्यक्ष श्री धर्मपाल आर्य कासण्डी गोहाना रहे। ध्वज आरोहण डॉ० सुदेश छिक्कारा कुलपति भक्त फूलसिंह महिला विश्वविद्यालय खानपुर (सोनीपत) ने किया। विशिष्ट अतिथि डॉ० जगदीश चौधरी (शिक्षाविद्) बल्लभगढ़, राजू राणा (बजघेड़ा) गुरुग्राम, प्रदीप नैन (खरैंटी) जीन्द व चौ बालकृष्ण लोचब एडवोकेट गोहाना रहे।

इस अवसर पर हरयाणा में शराबबन्दी आन्दोलन के प्रमुख नेता स्वामी नित्यानन्द सरस्वती ने कहा कि शराबखोरी को सरकार का नैतिक (कानूनी) समर्थन प्राप्त है जिसके कारण ऐसी विकृत मानसिकता और सोच का जन्म हुआ है जिससे शराब के साथ-साथ तम्बाकू, चरस, भांग, धतूरा, अफीम, कोकीन, स्मैक, हीरोईन, ब्राउन शुगर आदि नशीले पदार्थों का सेवन बिक्री और तस्करी अबाधगति से बढ़ती जा रही है। आज नशा-खोरी बड़प्पन का पर्याय बन गई है। इसके बिना कोई भी दावत अधूरी मानी जाने लगी है। यह अधोगति राष्ट्र की चूले हिलाकर रख देगी, इसका निराकरण करना हम-आप सभी का कर्तव्य बन जाता है। आगे स्वामी जी ने बोलते हुए कहा कि नशाबन्दी का यह अभियान जन-जन तक ले जाने के लिए आर्यसमाज के द्वारा गांव-गांव में जाकर सम्पर्क किया जा रहा है। फरवरी माह के प्रारम्भ में नशामुक्ति का अभियान पदयात्रा के रूप में जीन्द से प्रारम्भ किया जायेगा। आर्य महासम्मेलन में स्वामी रामानन्द स्वामी, मुक्तिवेश सुन्दर वैदिक (संगीताचार्य) पलवल, चौ० प्रदीपसिंह जैलदार गुरुग्राम, राजीव यादव कादीपुर गुरुग्राम, चौ० सतवीरसिंह सहरावत किसान नेता गुरुग्राम, सत्यवान नरवाल कंथूरा किसान नेता, वीरेन्द्र आर्य शादीपुर जुलाना, प्रि० जगजीतसिंह शर्मा बरौदा गोहाना, देवेन्द्रसिंह आर्य बुवाना जीन्द, वेदपाल देशवाल एडवोकेट धडौली जीन्द, शिक्षा अधिकाकरी जितेन्द्र आर्य सोनीपत, अमित शास्त्री पाजूखुर्द सफीदों, प्रदीप कादयान दूबलधन झज्जर, ओमप्रकाश कोच (अर्जुन अवार्डी) खरखौदा (प्रताप म० स्कूल) सुरेन्द्र शास्त्री गोहाना, प्रिं० आजाद सिंह (दून स्कूल) सोनीपत, ऋषिप्रकाश त्यागी (आर्यसमाज बादशाहपुर गुरुग्राम), डॉ० नरेन्द्रसिंह रेवाड़ी, आचार्य विनोद शास्त्री लूखी रेवाड़ी, सूबेदार ब्रह्मदेव आर्य महेन्द्रगढ़, ऋषिपाल अनंगपुर फरीदाबाद, नवीन लोचब बुपनिया झज्जर, प्रदीप ग्रेवाल एडवोकेट बामला भिवानी, पं० अविनाश शास्त्री गुरुग्राम, बहन मूर्तिदेवी बुधवार सुनारियां रोहतक, श्रीमती सन्तोष देवी लाढौत रोहतक, दीपक-रोहित देशवाल लाढौत रोहतक, प्रा० सुदीप राठी फर्रुखनगर (गुरुग्राम), कुलदीप मलिक-सुरेन्द्र मलिक- पार्षद-प्रवीन पार्षद-संदीप-ईश्वरसिंह मलिक-सुमन बुधवार माहरा, सुनील गोदारा मांई चरखी दादरी, मंजीत कासण्डी, मा० बलदीप आर्य भैसवान, सोमवीर शास्त्री कोच खरखौदा, राजेन्द्र शर्मा भावड़, सोनू पूनिया सुनारियां, ओंकार कोच कुलासी, प्रो० अशोक कुमार बुटाना, सत्यवान आर्य नाहरी, दयानन्द आर्य अहीरका, विजेन्द्रसिंह सरपंच भावड़, प्रिं० अनिल शर्मा लुदाना, नवीन लाठर एडवोकेट शादीपुर, नरेश आर्य, संजय आर्य कतूपुर, विजयपाल आर्य-जगवीर शास्त्री-राजकुमार आर्य आहुलाना, प्रिं० जगवीरसिंह बुटाना, प्रिं० शमशेर सिंह भावड़, राजेन्द्रसिंह कुण्डू बुटाना, सतवीर आर्य-सुरेश आर्य मुडलाना, रोहताश मलिक उग्राखेड़ी, विजयसिंह मलिक-मा० राजेन्द्रसिंह-सत्यनारायण आर्य बीधल, श्रवण शास्त्री-सुखदेव आर्य नरवाणा, कुलदीप शर्मा एडवोकेट गोहाना, बलजीत खासा बरौदा, प्रिं० ऊधमसिंह मोर गोहाना, पण्डित रामकुमार

शास्त्री ठसका, धनीराम घड़वाल, प्रिं० श्री भगवान बरोदा, प्रवीण खोखर गोहाना, प्रिं० अशोक कुमार, कृष्ण आर्य बुटाना, प्रिं० दिनेश कुमार घड़वाल, प्रिं० वीरेन्द्रसिंह बरोदा, बलवान शास्त्री जागसी, गुगन आर्य आँवली, वजीर आर्य सिवाह, चरणसिंह आर्य-बसन्त आर्य-विक्रम आर्य मुआना, रामकुमार आर्य, सेवाराम आर्य (पाजूखुर्द) विकास मोर लुदाना, रामचन्द्र आर्य-प्रदीप आर्य सुडाना, रामपाल आर्य कलावती, प्रो० करणसिंह आर्य शाहपुर, सतबीर आर्य ऐचरा खुर्द, रणवीरसिंह फौजी मोहाना, चौधरी जगपाल मलिक-नरेन्द्र शर्मा राम नगर, रामकुमार शास्त्री रामनगर, जसवंत आर्य जुलाना, रामवीर, निरञ्जन-आनन्द-सतपाल गोहाना, मा० मुनीराम-संदीप शर्मा भावड़, अनिल शर्मा परडाना, प्रिं० अशोक कुमार बरोदा, सतीश-राकेश गंगेसर, प्रिं० राजवीर शर्मा छिछड़ाना, हरिओम्, राजवीर आर्य अहुलाना गन्नौर, डॉ० शाक्तिसिंह नूरनखेड़ा, सुमेर आर्य करेवड़ी, उषा देवी किनाना, रामनिवास प्रधान-सज्जन शर्मा मालवी अनिल शास्त्री, राजगढ़, ओमप्रकाश आर्य प्रधान नरेश आर्य जुलाना, स्वामी रामानन्द शामलो कलां, सत्यवान आर्य, रामकली, निशु आर्या बुढ़ाखेड़ा लाठर, अशोक मलिक पोली, लाभसिंह सिंद्धू सफीदों, भगतसिंह शास्त्री अकालगढ, कर्मपाल आर्य खटकड़, शमशेरसिंह बरसोला, सुल्तान आर्य रामनगर जीन्द, अमित-राहुल-पंकज खन्दराई, अमन आर्य-रजाना खुर्द, कृष्ण आर्य मालसरी खेड़ा, दिलबाग आर्य धड़ौली, ओमप्रकाश आर्य-दिलावर पहलवान-रविन्द्र गंगाना, जयदेव आर्य, महिपाल चहल बाधडू, राजवीर आर्य हरिगढ़, रोहतास आर्य-सन्तराम आर्य-पंडित आर्य कालवा, डॉ० ओमप्रकाश आर्य हाट, महेन्द्रसिंह-सतबीर सिंह मलिक-विजेन्द्र आर्य रोझला, रोहताश आय-पवन आर्य-पिल्लूखेड़ा, महेन्द्र आर्य-कृष्ण आर्य-प्रदीप आर्य भम्भेवा, माजा आर्य (मोरखी), सत्यवान आर्य पाथरी, भोरसिंह आर्य-दीपक आर्य-सींक, वीरेन्द्र आर्य जामनी आदि पहुंचने वाले सभी आर्य-कार्यकत्ताओं का बार-बार धन्यवाद!

संयोजक-स्वामी नित्यानन्द सरस्वती,
निवेदक-नशाबन्दी परिषद् हरियाणा
आयोजक-नशामुक्ति हरियाणा अभियान

प्रेरक वचन

- **भगवान का अपने सच्चे भक्तों से बड़ा घनिष्ठ सम्बन्ध होता है।**
- **जिसे स्वयं पर विश्वास नहीं, उसे ईश्वर में विश्वास नहीं हो सकता।**
- **सुख बांटने से बढ़ते हैं और दु:ख कम होते हैं।**
- **धर्म का मार्ग तमाम विकृतियों से बचाता है।**
- **जीवन रंगों से भरा है और इन रंगों का पूरा आनन्द लेना चाहिए।**
- **धैर्य की भी एक सीमा होती है।**
- **कार्य उसी का सिद्ध होता है जो दूसरों के काम आता है।**
- **जो कुछ नहीं चाहता वही प्रेम कर सकता है।**
- **अपने दोष का दर्शन अपने को निर्दोष बनाने में समर्थ है।**

संकलन-भलेराम आर्य, गांव सांघी (रोहतक)

ब्रह्मचर्य के दीवाने आचार्य..... पृष्ठ 14 का शेष.......

का इतना अधिक प्रचार था कि सैकड़ों नवयुवक इनमें भाग लेने के लिये उतावले रहते थे। इन शिविरों की शिक्षा ने अनेक ऐसे नवयुवकों के जीवन भी सुधारे हैं जो किशोरावस्था से ही कुटेवों में पड़कर अपने जीवन का सर्वनाश कर चुके थे, सर्वथा निराश और हताश थे। ऐसे युवकों के लिये ये शिविर जीवनदायिनी संजीवनी सिद्ध हुए। कालान्तर में आचार्य जी गुरुकुल व समाज के कार्यों में अधिक व्यस्त हो गये और शिविरों की परम्परा शिथिल पड़ गई। ब्रह्मचारी हरिशरण जी भी प्रचार के लिए उड़ीसा चले गये। वहां उन्होंने ईसाई मिशनरियों का मुकाबला किया और हजारों गरीब लोगों को धन के लालच में ईसाई बनने से बचाया। वहीं जादू के खेल दिखाते हुए गले में पड़े काले नाग ने (सांप) ने उनको काट लिया और वे हमसे विदा हो गये। आचार्य जी पर भी अनेक कार्य आ पड़े। आज भी इस प्रकार के शिविरों की बहुत मांग है। सामाजिक कुरीतियों को समाप्त करने के लिये युवकों को तैयार करने का यह एक बहुत उत्तम माध्यम है। आचार्य जी ने इस प्रकार के छोटे-बड़े सैंकड़ों शिविरों का आयोजन किया था। **प्रस्तुति-अमित सिवाहा**

महर्षि दयानंद सरस्वती के नाम से 54 फुटा रोड महम रोड विद्यानगर से लेकर कदम हॉस्पिटल चौक तक के मार्ग का नामकरण महर्षि दयानंद सरस्वती के नाम से रखा गया। इसका उद्घाटन आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के महामंत्री तथा आर्यवीर दल हरयाणा के संचालक श्री उमेद शर्मा द्वारा किया गया। शहर के कर्मठ सामाजिक कार्यकर्ता प्रो० सत्यपाल आर्य और राजकुमार बीडीपीओ के सतत प्रयासों तथा पार्षद अंकुर कौशिक के सहयोग द्वारा यह संभव हो सका। इस अवसर पर शहर के अनेक गणमान्य व्यक्ति जिनमें चांदराम आर्य, मनजीत श्योराण सहायक कार्यालयाधीक्षक आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा उपस्थित रहे।

स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस के अवसर पर हलवासिया विद्या विहार सीनियर सैकेण्ड्री स्कूल भिवानी में सभामंत्री श्री उमेद शर्मा का सम्मान करते हुए स्कूल के स्टाफ एवं आर्यजन।

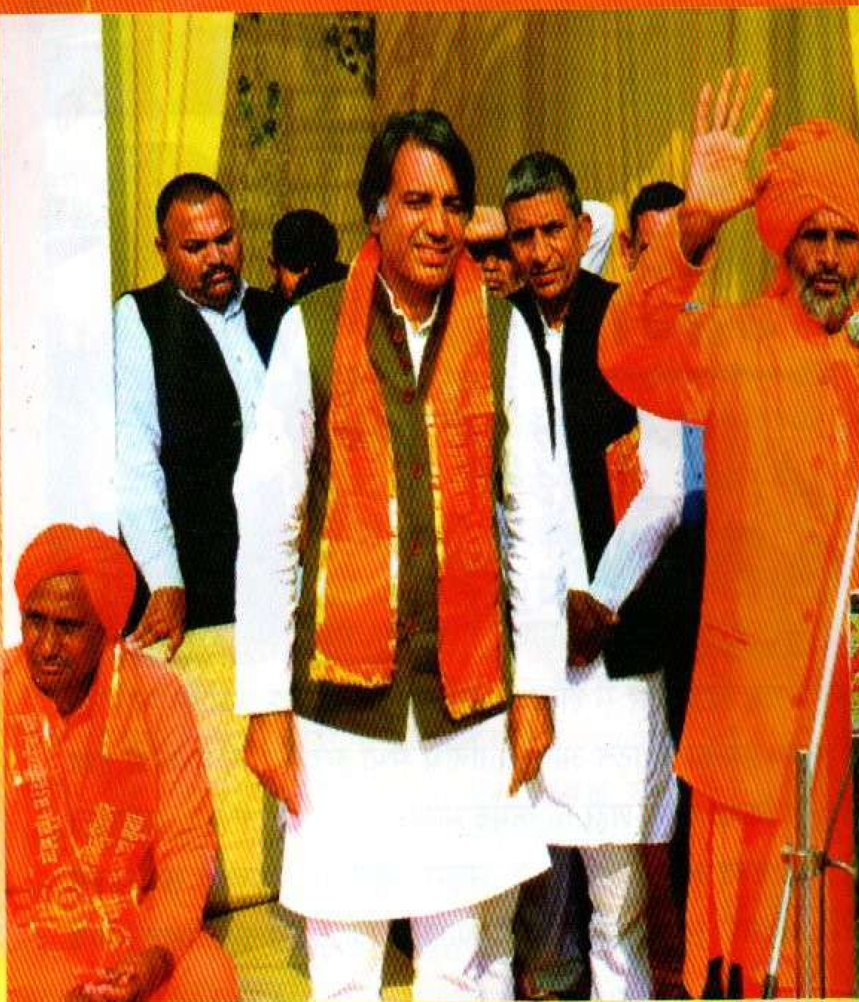

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की 200वीं जन्म जयन्ती वर्ष के उपलक्ष्य में एक आर्य महासम्मेलन 'नशामुक्त हरियााणा अभियान' को लेकर 17 दिसम्बर 2023 को सूर्या गार्डन गोहाना रोड में किया गया। कार्यक्रम का संयोजन स्वामी नित्यानन्द सरस्वती ने किया तथा अध्यक्षता स्वामी वेदात्मवेश (महाराष्ट्र) ने की एवं स्वागताध्यक्ष श्री धर्मपाल आर्य कासण्डी गोहाना रहे। ध्वजारोहण डॉ० सुदेश छिक्कारा कुलपति भक्त फूलसिंह महिला विश्वविद्यालय खानपुर (सोनीपत) ने किया।

प्रेषक :
मन्त्री
आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा
दयानन्द मठ, रोहतक
हरियाणा, 124001

श्री ....

पता ....

....

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा (रजि.) के स्वामित्व में मुद्रक, प्रकाशक उमेद शर्मा ने दुर्गेश्वरी प्रिंटर्स के लिए आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, रोहतक से मुद्रित एवं कार्यालय, सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ रोहतक-124001 से प्रकाशित।

- सम्पादक उमेद शर्मा